Part I Hons.
I A

Ancient Indian History
P.G. Exam. 1997

Ist paper

(1)

मारत के इतिहास में शुंगों की भूमिका

Q. → Evaluate the Role of the Sungas in the History of India ?

Ans. → 'हर्षचरित' से ज्ञात होता है कि सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने अपने कमजोर सम्राट बृहद्रथ की हत्या कर दी। पुराणों से ज्ञात होता है कि अंतिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ अत्यन्त दुर्बल राजा था। यहीं से मौर्य वंश का अंत हो गया और सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने शुंग वंश की स्थापना करने में सफलता प्राप्त की। अब पुष्यमित्र शुंग सेनापति से उत्तराधिकारी सम्राट बन गया। इससे स्पष्ट हो जाता है कि बृहद्रथ की सेना सम्राट बृहद्रथ के साथ न थी वरन् सेनानी या सेनापति पुष्यमित्र के साथ थी। इसीलिये तो वह बृहद्रथ की हत्या कर डालने में सक्षम हो सका।

पुष्यमित्र शुंग किस वंश का था इसके लिये विद्वानों के बीच कोई मतभेद नहीं है। बौद्ध ग्रंथ "दिव्याव-दान" के अनुसार पुष्यमित्र शुंग मौर्य वंश का था लेकिन इतिहासकार इसको मानने के लिये तैयार नहीं है। श्री हर प्रसाद शास्त्री का कहना है कि वे पारसी अथवा ईरानी थे, क्योंकि मित्र की उपाधि वे लोग धारण करते थे और मित्र पारसिक देवता मित्र सूर्य की उपासना करते थे इसलिये पारसिक थे, लेकिन कालान्तर में शास्त्री जी इस विचार को त्याग कर उन्हें ब्राह्मण वंशीय बतलाते हैं। मालविकाग्निमित्र के अनुसार शुंग वंश बैम्बिक वंश के थे। बैम्बिक वंश का संबंध विद्वानों ने बिम्बिसार से किया है जो क्षत्रिय वंश का था। विश्वसनीय साक्ष्यों के अभाव में ऐसा स्वीकार करना सही नहीं प्रतीत होता है, क्योंकि संभव है कि बैम्बिक शब्द का संबंध बिम्बिका नदी से है जो इस नदी के किनारे के निवासी रहे हो या किसी प्रकार का संबंध इसके साथ हो। फिर भी यह मत समीचीन मालूम नहीं होता है। बौधायन श्रौत-सूत्र" के अनुसार वे कश्यप गोत्र के थे जो ब्राह्मणों का गोत्र था। अतः वे ब्राह्मण थे। हरिवंश पुराण में औद्भिज्ज शब्द का उल्लेख मिलता है जो कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण थे। "औद्भिज्ज" का अर्थ आकस्मिक रूप से उदय होनेवाला के आधार पर डॉ० काशी प्रसाद जायसवाल ने उसे ब्राह्मण वंश का ही माना है।

इसके अलावे अन्य साहित्यों से भी प्रमाणित होता है कि शुंग ब्राह्मण थे। महर्षि पाणिनी और महर्षि पातंजलि पुष्यमित्र के थे न कि उसे ब्राह्मण वंशीय बताया है।

Scanned with CamScanner

मनुस्मृति में मनु ने वेदशास्त्र और शास्त्र ज्ञाता होने वाले को ब्राह्मण कहा है। इसप्रकार मनुस्मृति के आधार पर भी ब्राह्मण पुष्यमित्र ब्राह्मण ही थे। पुराणों और हर्षचरित में भी शुंग को ब्राह्मण ही मानते हैं। आश्वलायन श्रौत सूत्र के आधार पर मैकडोनॉल और कीथ महोदय ने शुंग को "आचार्य" या ब्राह्मण बताया है।

उपर्युक्त पुराणों के आधार पर यही निष्कर्ष निकलता है कि शुंग भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण थे। अब प्रश्न उठता है कि पुष्यमित्र शुंग ने ब्राह्मण होते हुए भी शस्त्र उठा कर वध क्यों किया? इतिहासकार जयसवाल का कथन है कि सम्राट अशोक द्वारा बौद्धमतावलम्बी होने के कारण उनके पूर्वजों को राजपुरोहित पद से पृथक कर दिया गया था। अतः वे लोग मौर्य सेना में भर्ती होने लगे। पुष्यमित्र भी सेना में भर्ती होकर उन्नति करते-करते सेनापति बन गया। सेना या सेनापति के उद्देश्य से शस्त्र उठाना समीचीन है। लेकिन डॉ० हेम चन्द्र रायचौधरी इसमत से सहमत नहीं हैं। मनु का विचार है कि आवश्यकता पड़ने पर ब्राह्मण भी शास्त्र विद्या छोड़कर शस्त्र विद्या ग्रहण कर सकता है। आचार्य द्रोण, अश्वत्थामा, कृपाचार्य आदि ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिन्होंने शास्त्र विद्या छोड़कर शस्त्र ग्रहण किया।

जो कुछ भी हो इतना तो सत्य है कि जिस तरह कौटिल्य ने नन्दवंश के राजा का अंत किया था उसी प्रकार पुष्यमित्र ने मौर्य वंश का अंत कर दिया अतः ब्राह्मण ने ही मौर्य वंश को राज्य दिलाया और छीन भी लिया।

जिस समय पुष्यमित्र बृहद्रथ की हत्या करके गद्दी पर आसीन हुआ था उस समय मगध राज्य की स्थिति डांवाडोल थी। कश्मीर और गंधार अशोक के पश्चात ही स्वतंत्र हो गया था। दूर के राज्यों को यह हाल देखकर निकटवर्ती राज्यों ने भी इसका अनुकरण किया। यहाँ तक कि कलिंग, महाराष्ट्र तथा आन्ध्र प्रदेशों ने मगध राज्य को चुनौती देने पर तुले हुए थे। इस विशृंखलित राजनीतिक स्थिति से लाभ उठाने के लिये उत्तर पश्चिमी सीमा के कई स्थानों पर शक्तिशाली राज्यों ने अपना अधिकार कर लिया था। ऐसी स्थिति में पुष्यमित्र

Scanned with CamScanner

को सबसे पहला कर्तव्य था कि मगध के हित की रक्षा करना।

पाटलिपुत्र पर अधिकार करने के उपरांत उसने मगध के अधीनस्थ राज्यों, प्राची, कोशल, वत्स, आकर और अवन्ति को पुनः संगठित किया और केन्द्रीय सत्ता को दृढ़ सत्ता बनाने के लिये पूर्ण प्रयत्न किया। राजधानी पाटलिपुत्र से पश्चिमी प्रान्तों के दूर होने से शासन का नियंत्रण ढीला होने का डर था। इसलिये पुष्यमित्र ने आकर प्रान्त के मुख्य नगर विदिशा को दूसरी राजधानी बनाकर अपने पुत्र अग्निमित्र को वहाँ का राज्य प्रतिनिधि बना दिया।

इस प्रकार अपनी आंतरिक स्थिति सुदृढ़ करने के बाद उसने साम्राज्य विस्तार आरंभ किया।

सर्वप्रथम उसने विदर्भ पर आक्रमण किया। कहा जाता है कि मौर्य साम्राज्य के अंतिम समय में विदर्भ का राजा यज्ञसेन ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया। यज्ञसेन अंतिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ के मंत्री का संबंधी था जो स्वाभाविक रूप से पुष्यमित्र का शत्रु था। पुष्यमित्र को मौका मिलते ही उसे आत्म समर्पण करने को कहा लेकिन यज्ञसेन इसके लिये तैयार न हुआ। तत्पश्चात पुष्यमित्र ने अपने पुत्र अग्निमित्र को सेना के साथ आक्रमण के लिए भेजा। अग्निमित्र ने कूटनीति का सहारा लेते हुए यज्ञसेन के चचेरे भाई माधवसेन को अपनी ओर मिला लिया कि यज्ञसेन को पराजित कर अपने अधीन कर लिया। विदर्भ राज्य को दोनों भाईयों के बीच बाँट दिया। मालविकाग्निमित्र के अनुसार- माधवसेन अग्निमित्र का पूर्व से ही मित्र था। एकबार जब माधवसेन अपने मित्र से मिलने विदिशा जा रहा था तब यज्ञसेन ने इसे मार्ग में ही बंदी बना लिया था। हालांकि इससे पूर्व पुष्यमित्र ने बृहद्रथ के मंत्री जो यज्ञसेन का संबंधी था, कारागार में डाल दिया था। जब अग्निमित्र ने अपने मित्र को मुक्त करने की मांग की जो अग्निमित्र को अपने प्रतिबंध के खिलाफ लगा। परिणामतः दोनों में युद्ध आरंभ हो गया। एक तो इसका भाई माधवसेन जिसको उन्होंने स्वयं कैद कर डाला था और मंत्री जो इसका सहयोगी होता पूर्व से ही कैद था ऐसी दुर्बल स्थिति में यज्ञसेन का पराजित होना स्वाभाविक था और विजयश्री पुष्यमित्र को मिलना स्वाभाविक था।

डा० स्मिथ, डा० राय चौधरी एवं स्टेनकोनो आदि विद्वानो के अनुसार कालिंग राजा खारवेल ने मगध राज्य पर आक्रमण ~~आक्रेन~~ दो बार किया। प्रथम आक्रमण 165ई० पूर्व मे जिसमे खारवेल पाटलिपुत्र तक पहुंच गया था। लेकिन पुष्यमित्र ने कूटनीतिक चाल चली यानी पीछे मथुरा हट गया जिस कारण खारवेल आगे न बढ़ सका। दूसरा आक्रमण उसने 161ई० पूर्व मे किया इस बार उसने पाटलिपुत्र पहुँच गया। ~~लेकिन~~ एक जैन मंदिर वहाँ से उठाकर ले आये जिससे पुष्यमित्र को कोई खास क्षति नही हुआ। लेकिन कुछ इतिहासकार इसे सत्य नही मानते है क्योंकि उनका कहना है कि हाथी गुम्फा अभिलेख मे यह लिखा हुआ है कि उसका आक्रमण मगध राजा बृहस्पति मित्र के साथ हुआ जिसको उन्होंने पराजित किया। डा० जय सवाल महोदय ने बृहस्पति मित्र, ~~पुष्यमित्र~~ का समीकरण पुष्य मित्र से किया है। उनका कहना है कि बृहस्पति पुष्यमित्र का नक्षत्राधिपति है। अत एव बृहस्पति मित्र, पुष्यमित्र का ही पर्यायवाची है लेकिन इतिहासकार इस मत से भी सहमत नही है। उसका कहना है कि बौद्ध ग्रंथ "दिव्यावदान" मे पुष्यमित्र तथा बृहस्पति मित्र तथा पाटलिपुत्र और राजगृह का उल्लेख मिलता है इसलिये दोनो का एक होना संभव नही है। यदि दोनो एक ही व्यक्ति थे तो विदिशा अथवा मगध मे क्यो नही मुद्रा मिलती है। अभिलेख मे बृहस्पति को राजा कहा गया है। परन्तु पुष्यमित्र सेनापति के नाम से ही पुकारा गया है। इसलिए इतिहासकार R.C. Banerjee का कहना है कि "बृहस्पति मित्र मगध के किसी प्रान्त का शासक था जिसे पुष्यमित्र की ओर से राजा का पद प्राप्त था।

यवन और पुष्यमित्र के साथ आक्रमण

महर्षि पंतजलि के महाकाव्य तथा गार्गी संहिता के आधार पर कहा जाता है कि मथुरा, पंचाल और साकेत को जीत करते हुए यवन पाटलिपुत्र तक आ पहुंचे। लेकिन वहा से यवनों को पराजित होकर लौटना पड़ा। मित्र से ज्ञात होता है कि दूसरा आक्रमण यवनो ने तब किया जब पुष्यमित्र के अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा घूमता हुआ सिन्धु नदी के दक्षिणी तट पर पहुंचा तो यवनो ने उसे पकड़ लिया। इसी अवसर पर यवनो तथा पुष्यमित्र की सेना के बीच संघर्ष हुआ और यवनो को वसुमित्र ने बुरी तरह पराजित कर दिया।

अब सवाल उठता है कि यवनों के इन युद्धों का नेता कौन था ? तो इसमें हम दो नाम पाते हैं, मिनाण्डर और डिमेट्रीयस। लेकिन इतिहासकारों का मत भिन्न है। इतिहासकार H.C. Raychaudhary और Sten Konow का विचार है कि यवनों का नेता डिमेट्रीयस था। लेकिन कुछ इतिहासकार बौद्ध ग्रन्थ तथा सिक्कों के आधार पर मिनाण्डर को ही नेता मानते हैं। लेकिन एक तीसरा मत है जिसका विचार है कि यवनों ने एक ही बार आक्रमण किया। जिसका नेता डेमेट्रीयस था, जो कुछ भी हो सभी साक्ष्यों से स्पष्ट है कि आक्रमण एक ही था। लेकिन पुष्यमित्र ने यवनों को पराजित किया।

अश्वमेध यज्ञ :→ पुष्यमित्र शुंग ने अपने जीवन काल में दो अश्वमेध यज्ञ किये। मालविकाग्निमित्र के अनुसार उनका पहला यज्ञ मौर्य सम्राट बृहद्रथ की हत्या कर सिंहासनारूढ होने के उपलक्ष्य में किया। दूसरा यज्ञ का वर्णन पतंजलि के महाभाष्य से मिलता है। जिसमें पतंजलि स्वयं ऋत्विज (प्रमुख पुरोहित) बने थे जैसा उनके वक्तव्य से भी पता चलता है कि "इह पुष्यमित्र याजयाम याजयाम" (यहाँ हम पुष्यमित्र का यज्ञ करा रहे हैं) यह अश्वमेध यज्ञ यवनों को पराजित करने के उपलक्ष्य में किया गया था जिसमें वसुमित्र यवनों से अश्वमेध का घोड़ा छीन लिया था। कठोर परिश्रम के द्वारा उसने अति विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी। पंजाब में इसका साम्राज्य जालंधर और स्यालकोट तक, दक्षिण में नर्मदा नदी तक था। साम्राज्य पर नियंत्रण रखने के लिये उसने साम्राज्य के विभिन्न प्रान्तों में अधिकारी नियुक्त कर उनके उपराजा पुत्र अग्निमित्र को [illegible] के लिये विदिशा की गद्दी पर बैठाया। केन्द्रीय शासन के रूप में उसने पाटलिपुत्र की गद्दी पर स्वयं था और शासन सत्ता अपने हाथों में रखा था।

प्रसिद्ध ग्रन्थ दिव्यावदान और तारानाथ का कथन है कि पुष्यमित्र बौद्ध धर्म का घोर शत्रु था उसने स्यालकोट में एक भिक्षुक के सिर कलम को पारितोषिक एक सौ दीनार देने की घोषणा की।

1. इस काल में संस्कृत साहित्य का काफी विकास हुआ। पाणिनी की "अष्टाध्यायी" पर महाभाष्य लिखने वाले महर्षि पतंजलि इसी काल के विभूति थे। मनुस्मृति .... है।

Scanned with CamScanner

मनुस्मृति तथा विष्णु स्मृति की रचना इसी काल में हुई। कुछ इतिहासकारों का मत है कि रामायण और महाभारत का अंतिम संस्करण इसी काल में हुआ। "काम सूत्र" भी इसी काल में लिखा गया। वैज्ञानिक आयुर्वेद ग्रंथ चरक संहिता आदि की रचना इसी काल में हुई। इस प्रकार यह काल साहित्य के उन्नति का काल था।

शुंग काल में कला की प्रगति भी काफी हुई थी। इस काल के प्रमुख नगरों में सुन्दर भवनों तथा प्रासादों का निर्माण कराया गया था। साँची के स्तूप तथा भारहुत के स्तूप एवं Railing (जंगला) ने शुंग काल को अमर बना दिया। इसके अलावे उड़ीसा और महाराष्ट्र के मंदिरों में शुंगकाल के कला की झलक मिलती है। गुफा मंदिरों में हाथी गुम्फा, उड़ीसा का मायापुरी गुफा, गणेश गुफा आदि। सीता बेंगा नामक जो मंदिर रायगढ़ में मिलती है अजंता के गुफाओं में शुंग काल के दर्शन होते तो साथ ही बोध गया के मंदिर में भी विभिन्न प्रकार के चित्रकला की झलक मिलती है।

इस काल में वैदिक धर्म तथा ब्राह्मण धर्म का काफी विकास हुआ। दो अश्वमेध यज्ञ करके धर्म का स्पष्टीकरण होता है। भागवत धर्म का प्रचार दिन प्रतिदिन होता रहा था। इस काल में कर्मकाण्ड आदि से विशेष बल ईश्वर भक्ति पर दिया जाता था। लोग विभिन्न देवी देवताओं की मूर्ति बना कर पूजा करते थे। विष्णु और शिव के अतिरिक्त कृष्ण की उपासना की जाने लगी। ब्राह्मण धर्म को ऊँचा माने जाने लगा। जिस कारण समाज में उसे प्रथम स्थान मिल गया। क्षत्रिय को दूसरा स्थान मिला। इसलिए कुछ इतिहासकार इसे ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान का काल कहते हैं।

पुष्यमित्र शुंग एक महान सेनानी कुशल शासक तथा सफल विजेता था। ब्राह्मण होते हुए भी उसे क्षत्रिय धर्म तथा उसके कार्यों से प्रेम था। अतः ऐसा जान पड़ता है कि वह बचपन से ही सामाजिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था। अपनी शूरता, वीरता, योग्यता और कुशल सेनापतित्व के कारण ही वह मौर्य सम्राट का सेनापति बना था। इतना ही नहीं उसके वृहद्रथ को मार कर मौर्य साम्राज्य का अधिपति होने पर भी इस वीर

और जिस प्रकार ब्राह्मण ने कभी सम्राट का उपाधि धारण नहीं की। वह हमेशा ही अपने को सेनापति ही कहता रहा। क्योंकि वह पहले मौर्य साम्राज्य का सेनापति था। वास्तव में यह देश भक्ति का उज्जवल प्रतीक है। इस तरह पुष्यमित्र शुंग के वंशजों का राज्य भारत के इतिहास में और विशेष रूप से मध्य भारत के इतिहास में एक महत्वशाली युग का प्रवर्तक था। वास्तव में इस वंश से भारतीय इतिहास में एक नये युग का आरंभ होता है। प्रो० नाथ धार ने शुंग वंश के शासक काल के संबंध में लिखा है कि — "A brilliant out rupassion of the golden age of the guptas." "गुप्त वंश का गौरव पूर्ण पूर्वगामी कहा है।"

यो तो पुष्यमित्र को हत्यारा और धूर्त कहा गया है जैसा कि बाण भट्ट ने वृहद्रथ की मृत्यु का वर्णन इस प्रकार किया है कि धूर्त सेनापति पुष्यमित्र ने सारी सेना की पकड़ करायी और बहाना बनाया कि वह राजा से सेना का निरीक्षण कर रहा है। उसने इसी अवसर पर सारी सेना के सामने अल्प बुद्धि वाले मौर्य वंश के टिमटिमाते सितारे वृहद्रथ को हत्या कर दी।

जो कुछ भी हो पुष्यमित्र शुंग स्वयं बहुत बड़ा महत्वाकांक्षी व्यक्ति था और अपने कमजोर शासन से तंग आया हुआ था उसने परिस्थिति के अनुकूल देखकर सेना को अपनी ओर कर लिया और मगध पति बन बैठा। यह भी सच है कि उसने अपनी वीरता से यवनों के आक्रमण को रोककर भारत को नष्ट होने से बचाया। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक क्षेत्र में भी उनकी देन महान है। अतः प्राचीन भारत के इतिहास में शुंग वंश का काफी महत्व पूर्ण स्थान है।

The End
3.12.92

Scanned with CamScanner